चालिहा महोत्सव के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

जय झूले लाल जी की, जोर से बोलो- जय झूलेलाल। आयो लाल सभई चओ झूलेलाल।

सिंधी पंचायत, विज्ञान नगर द्वारा आयोजित चालिहा महोत्सव, जो हमारे धार्मिक आस्था का पर्व है। हम चालीस दिन तक आराध्य देवता झूलेलाल की पूजा करते हैं और झूलेलाल जी के प्रति अपने आपको समर्पित करते हैं।

सिंधी समाज बहुत आध्यात्मिक, धार्मिक और अपने धर्म के प्रति अटूट रूप से जुड़ा रहा है। वर्तमान में पाकिस्तान, पहले भारत एक था, उस समय सिंध प्रांत के अंदर वीरशाह बादशाह के द्वारा वहां पर हिन्दुओं पर अत्याचार किए जा रहे थे। हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन करने के लिए बाध्य किया जा रहा था। धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया जा रहा था, लेकिन सिंधी समाज हमेशा अपने धर्म और अध्यात्म के प्रति समर्पित भाव से रहा है।

उस समय सारे अत्याचार सहन करने के बाद भी उन्होंने धर्म परिवर्तन नहीं किया। उन्होंने चालीस दिन तक अपने धर्म, अपनी संस्कृति को बचाने के लिए कठोर तपस्या की।

उनकी कठोर तपस्या को देखते हुए वरुण देवता जी ने वरदान दिया कि भगवान झूलेलाल आएंगे और तुम्हारी रक्षा करेंगे। यह विश्वास है, यह आस्था है, यह समर्पण है। जब आस्था, समर्पण और सेवा का भाव होता है तो भगवान भी अवतार रूप लेते हैं।

सिंधी समाज आज भी उसी संस्कृति को लेकर आगे बढ़ रहा है। उसी अध्यात्म, धर्म को लेकर आगे बढ़ रहा है। सिंधी समाज को पुरुषार्थ समाज

इसलिए कहते हैं कि वह पुरुषार्थ, समर्पण और सेवा के द्वारा समाज में अपना स्थान बनाता है। इसलिए जहां भी सेवा का काम हो, जहां मानव सेवा का धर्म हो, मानव सेवा उनके लिए सबसे पहली सेवा होती है। चाहे बीमार लोगों का इलाज कराना हो, भूखे को भोजन कराना हो, प्यासे की प्यास बुझानी हो, राहगीर के ठहरने के लिए धर्मशाला हो, शिक्षा और संस्कृति के लिए विद्यालय हो।

हर मानव कल्याण के कार्यों और सामाजिक सेवाओं के लिए सिन्धी समाज आगे रहता है। चालीस दिनों तक का यह समय तप-तपस्या, समर्पण, आध्यात्मिक और धर्म के कार्यों का समय है। यह तन-शुद्धि, मन-शुद्धि और आत्म-शुद्धि का समय है। इस समय हम सात्विक जीवन जीकर अपने तन और आत्म-शुद्धि से भगवान को प्राप्त करें। यह चालीहा उसी का पर्व है।

इस चालीहा महोत्सव पर मैं आप सबको शुभकामनाएँ देता हूँ। भगवान झूलेलाल की कृपा हम सभी पर बनी रहे। हम इसी तरह, पुरुषार्थ से, हमारी धर्म-संस्कृति, आस्था को समाज के हर वर्ग तक, समाज के हर क्षेत्र तक फैलाएं।

भारतीय संस्कृति, धर्म, आध्यात्मिकता विश्व के अन्दर नेतृत्व करे। भगवान झूलेलाल हमें इसी तरीके से मानव-सेवा के लिए प्रेरणा देते रहें।

आप सभी को चालीहा महोत्सव की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।